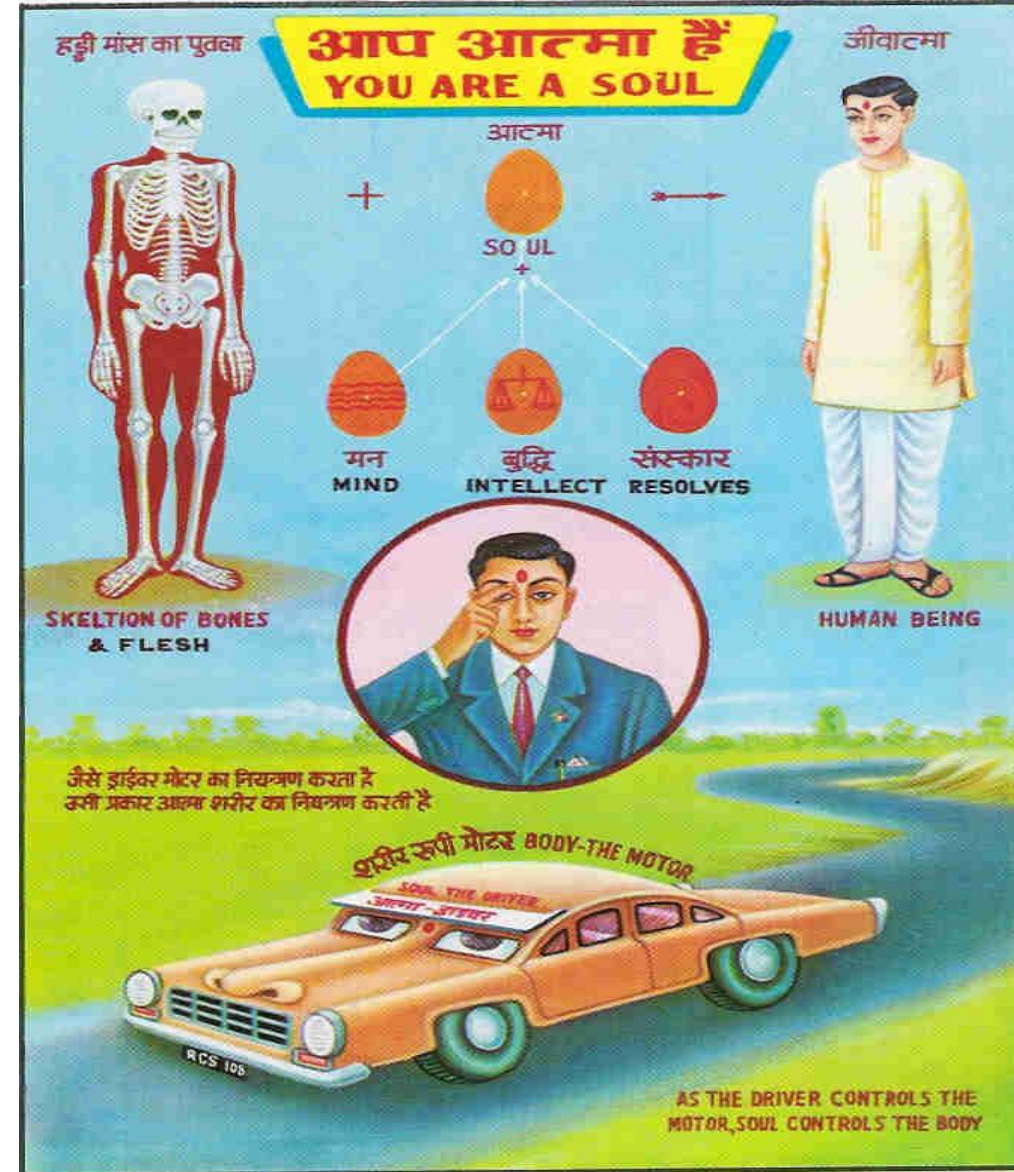


# Self Respect

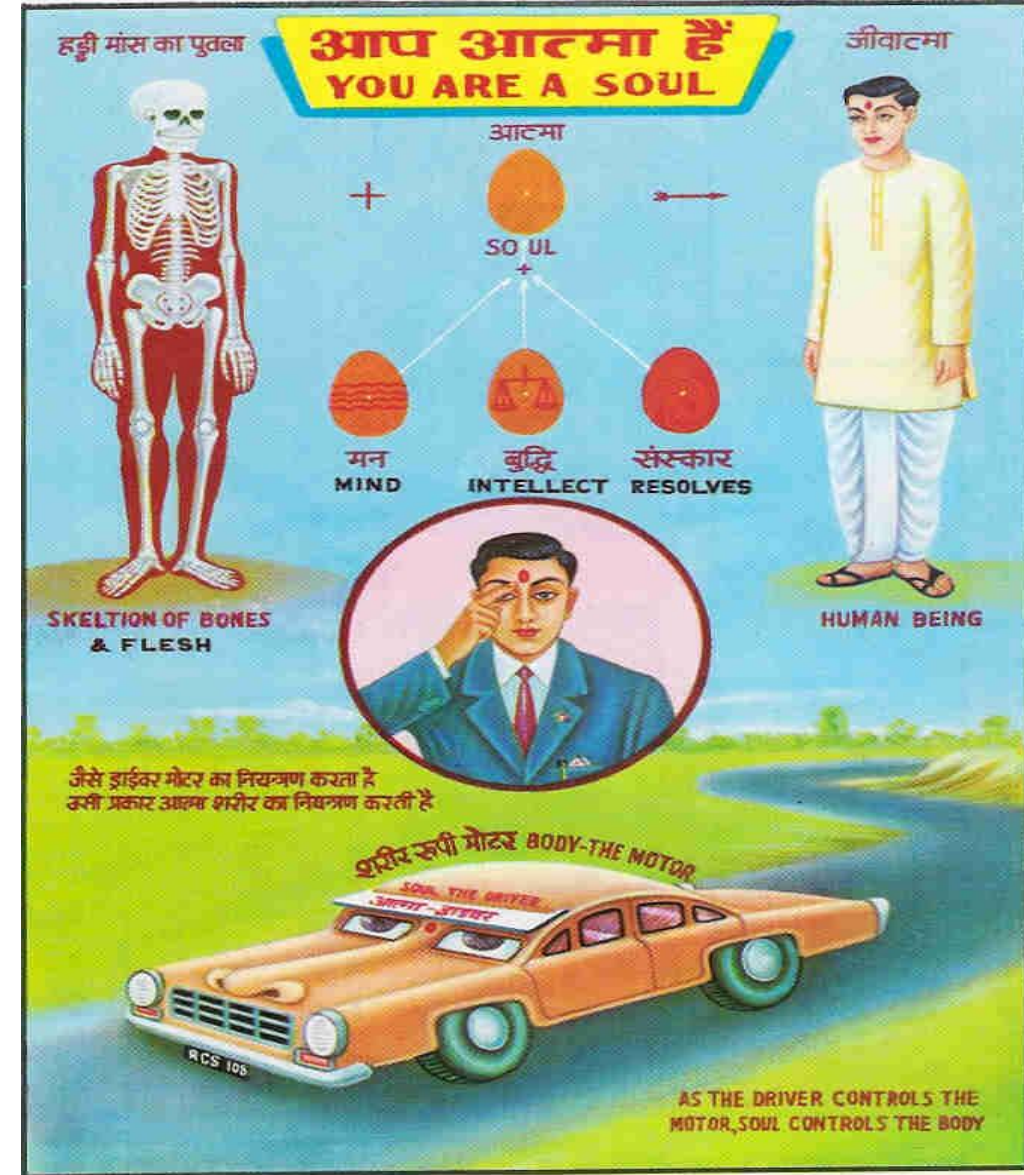
07-08-2014



If the body be compared to a motor car, the soul is the driver with the motive force. In the brain is the starter, the gear, the brake, etc., but the soul it is that uses them. The body is not for its own sake but for the soul which abides in the brain. A yogi is soul-conscious. He knows that the body is an assemblage of organs given to the soul, and the abilities of thinking and judging are inherent in the soul.

✓ बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं कि गीता के भगवान् ने गीता सुनाई । एक बार सुनाकर फिर तो चले जायेंगे । अभी तुम बच्चे गीता के भगवान से वही गीता का ज्ञान सुन रहे हो और राजयोग भी सीख रहे हो । वे लोग तो लिखी हुई गीता पढ़कर कण्ठ कर लेते हैं फिर मनुष्यों को सुनाते रहते हैं ।

✓ बाप कहते हैं तुमको राजयोग सिखाकर हम अपने घर चले जाते हैं । जिनको पढ़ाता हूँ वह फिर आकर अपनी प्रालब्ध भोगते हैं । अपनी कमाई करते हैं, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार धारणा कर फिर चले जाते हैं । कहाँ? नई दुनिया में ।

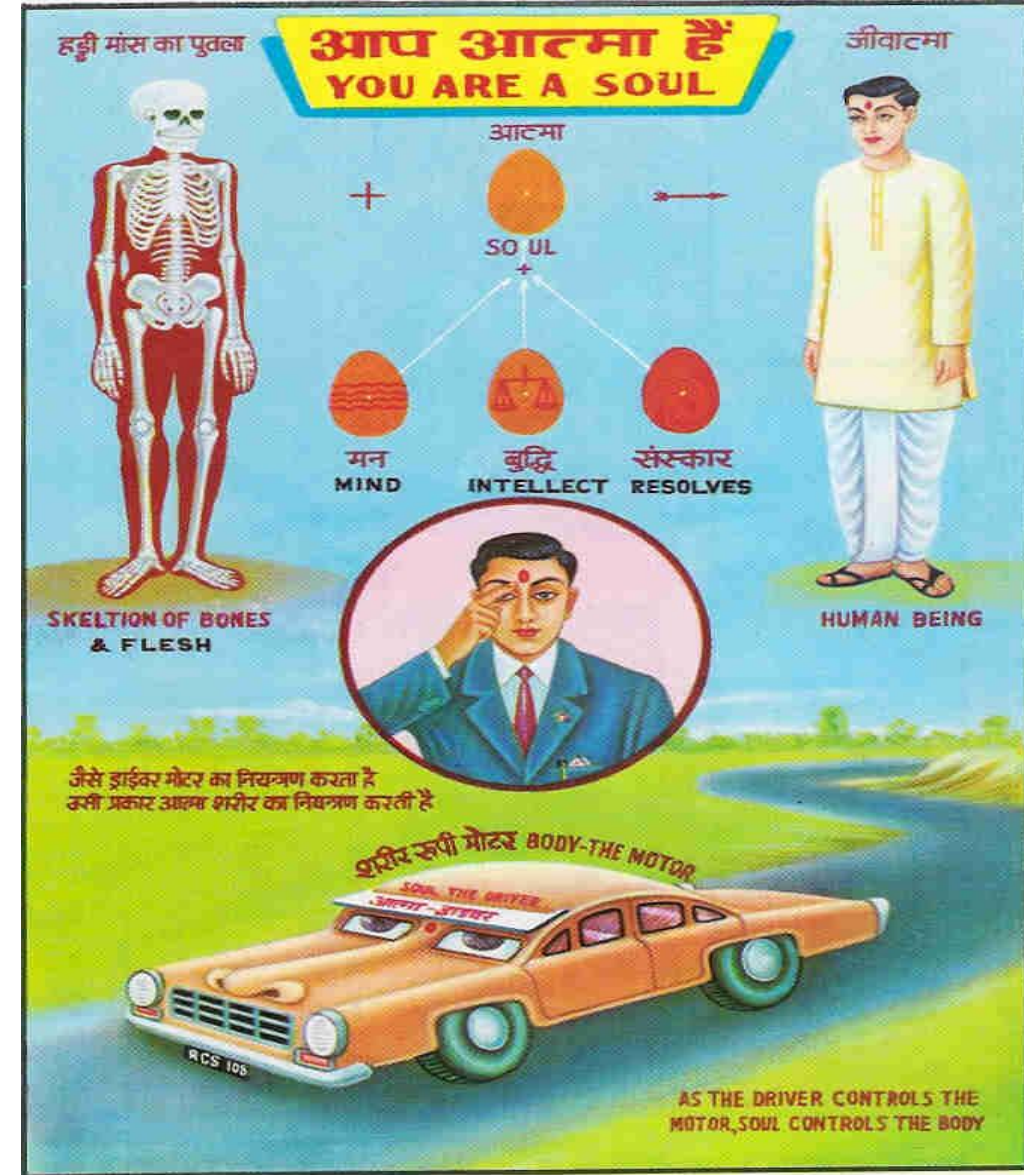


If the body be compared to a motor car, the soul is the driver with the motive force. In the brain is the starter, the gear, the brake, etc., but the soul it is that uses them. The body is not for its own sake but for the soul which abides in the brain. Hence, a yogi is soul-conscious. He knows that the body is an assemblage of organs given to the soul, and the abilities of thinking and judging are inherent in the soul.

✓ यह पढ़ाई है ही नई दुनिया के लिए । मनुष्य तो यह नहीं जानते कि पुरानी दुनिया खत्म हो फिर नई स्थापन होनी है । तुम जानते हो हम राजयोग सीखते ही हैं नई दुनिया के लिए ।

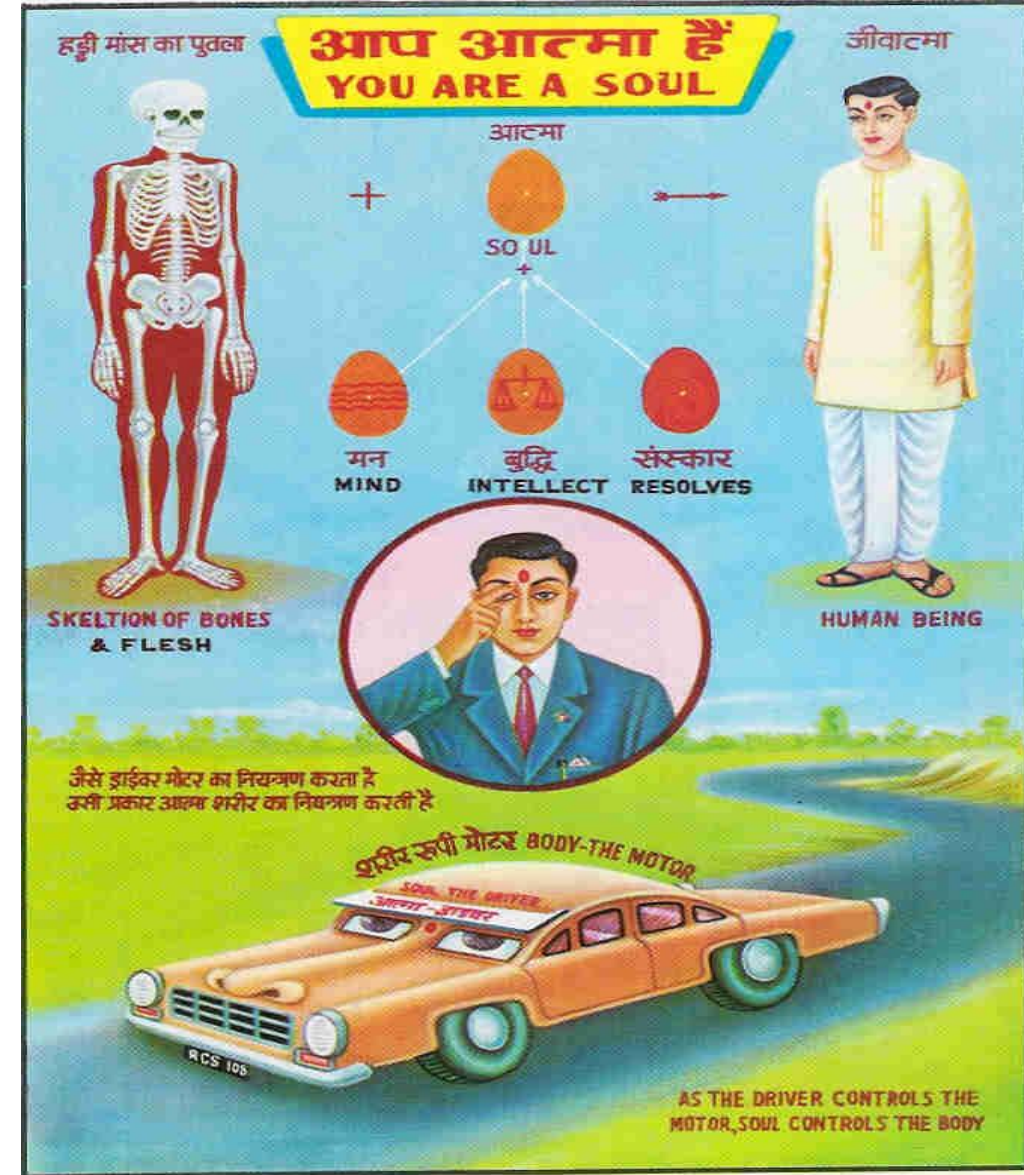
✓ वही देवतायें पुनर्जन्म लेते-लेते अभी ब्राह्मण बने हैं ।

✓ अब बाप बच्चों को कहते हैं-हमने 5 हजार वर्ष पहले भी तुमको समझाया था । हम आते ही हैं तुम बच्चों को आधाकल्प सुखी बनाने ।



If the body be compared to a motor car, the soul is the driver with the motive force. In the brain is the starter, the gear, the brake, etc., but the soul it is that uses them. The body is not for its own sake but for the soul which abides in the brain. So, a yogi is soul-conscious. He knows that the body is an assemblage of organs given to the soul, and the abilities of thinking and judging are inherent in the soul.

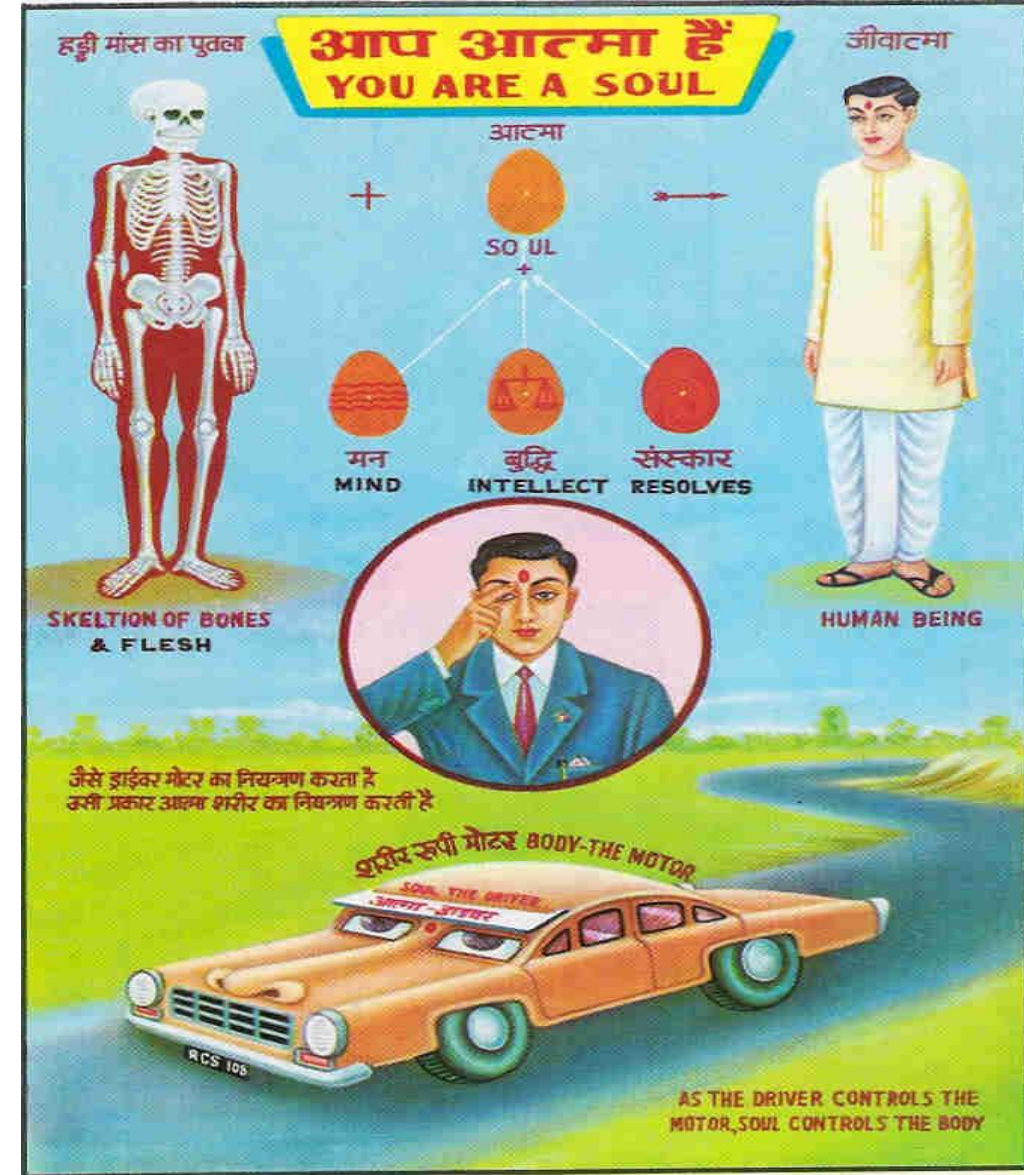
- ✓ कल्प-कल्प जो समझते हैं वही समझ लेते हैं । जो देवता बनने वाले नहीं, वह आयेंगे ही नहीं ।
- ✓ तुम समझते हो पावन दुनिया के थे, मनुष्य भी याद करते हैं क्योंकि पावन दुनिया होकर गई है, जिसको स्वर्ग कहा जाता है । परन्तु अब तमोप्रधान होने कारण समझ नहीं सकते हैं ।
- ✓ सन्यासियों की भी मिशन है । सिर्फ पुरुषों को सन्यास कराए मिशन बढ़ाते हैं । बाप फिर प्रवृत्ति मार्ग की नई मिशन बनाते हैं । जोड़ी को ही पवित्र बनाते हैं । फिर तुम जाकर देवता बनेंगे । तुम यहाँ सन्यासी बनने के लिए नहीं आये हो । तुम तो आये हो विश्व का मलिक बनने ।



If the body be compared to a motor car, the soul is the driver with the motive force. In the brain is the starter, the gear, the brake, etc., but the soul it is that uses them. The body is not for its own sake but for the soul which abides in the brain. Hence, a yogi is soul-conscious. He knows that the body is an assemblage of organs given to the soul, and the abilities of thinking and judging are inherent in the soul.

✓ वरदान: माया की छाया से निकल याद की छत्रछाया में रहने वाले बेफिक्र बादशाह भव !

✓ अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |



If the body be compared to a motor car, the soul is the driver with the motive force. In the brain is the starter, the gear, the brake, etc., but the soul it is that uses them. The body is not for its own sake but for the soul which abides in the brain. So, a yogi is soul-conscious. He knows that the body is an assemblage of organs given to the soul, and the abilities of thinking and judging are inherent in the soul.